# पश्चिम एशिया में अजीब स्थिति

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- मोहम्मद अयूब (प्रोफेसर, मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डीसी)

02 जनवरी, 2019

**"तेल अवीव का मानना है कि रियाद के साथ बेहतर संबंध कई प्रमुख रणनीतिक लक्ष्यों को पूरा करेंगे।"**

सऊदी अरब, जो इस्लामिक रूढ़िवादियों का तथाकथित गढ़ है और इजराइल, जो अरब फिलिस्तीन में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा बनाई गयी यहूदी देश है, के बीच बढ़ती घनिष्ठता, पहली नजर में हैरान करने वाली प्रतीत होती है। दोनों देशों के बीच बढ़ते संबंधों को एक पुरानी कहावत मेरे दुश्मन का दुश्मन मेरा दोस्त है के संदर्भ में समझा जा सकता है।

**जटिल कारण**

दुश्मन ईरान है, जिसे दोनों देश पश्चिम एशिया में अपने रणनीतिक हितों के लिए प्राथमिक खतरे के रूप में देखते हैं। सऊदी अरब फारस की खाड़ी और व्यापक पश्चिम एशिया में प्रभाव के लिए ईरान के साथ एक भयंकर प्रतिस्पर्धा में लगा हुआ है। लगता है कि रियाद सीरिया, लेबनान और इराक में हुए हाल की घटनाओं के साथ-साथ छोटे कतर के ढुलमुल रवैये के कारण इस प्रतियोगिता को हार रही है।

सऊदी अरब के प्रति इजराइल द्वारा संबंध बढ़ाने के इशारे का कारण अधिक जटिल हैं। बेशक, ईरान के खिलाफ एक आम मोर्चा इजराइल नीति का निर्धारण करने वाला एक प्रमुख कारक है। ईरान पश्चिम एशिया में इजराइल के परमाणु एकाधिकार के लिए एक संभावित चुनौती है और इस क्षेत्र के इज़राइल प्रभुत्व को बाधित करने के लिए लेवेंट में अपने प्रभाव का उपयोग करता है। लेकिन उतना ही महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इजराइल सरकार का मानना है कि रियाद के साथ बेहतर संबंध अन्य प्रमुख लक्ष्यों की पूर्ति करेंगे।

इजराइल के साथ संबंध स्थापित करने में सऊदी अरब की पहल, अन्य अरब देशों, विशेष रूप से खाड़ी के तेल समृद्ध राजतंत्रों को प्रेरित करने से अधिक संबंधित है, जिससे कि उनकी अर्थव्यवस्थाओं को इजरायल निवेश और तकनीकी विशेषज्ञता के लिए खोला जा सके, ताकि इजरायल को पर्याप्त आर्थिक लाभ मिल सके। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में इजराइल की सफलता महत्त्वपूर्ण रूप से एक महत्वपूर्ण विकास पर निर्भर है, भले ही अनजाने में, सऊदी अरब के साथ संबंध शुरू हो जाये।

वर्ष 2011 में अरब वसंत के दौरान भी विरोध बढे, क्योंकि तुर्की ने सत्ताधारी सरकारों को उखाड़ फेंकने का उत्साहपूर्वक स्वागत किया तो वहीं उस दौरान सऊदी शासन, जो खुद को कमजोर महसूस कर रहा था, ने इसका दृढ़ता से विरोध किया था।

दूसरा, इजराइल सरकार का अनुमान है कि सऊदी शासन के साथ संबंधों में सुधार, तेल अवीव की संतुष्टि के लिए इजराइल-फिलिस्तीनी संघर्ष को हल करने में मदद करेंगे। इसका मतलब यह हुआ कि इजराइल फिलिस्तीनियों को कोई भी नागरिक या राजनीतिक अधिकार दिए बिना जॉर्डन नदी और भूमध्य सागर के बीच पूरे क्षेत्र को नियंत्रित करना जारी रखेगा। इजराइल को लगता है कि सऊदी मदद से यथास्थिति अन्य अरब और मुस्लिम देशों के लिए स्वीकार्य हो सकती है, क्योंकि उनमें से कई, जैसे कि मिस्र और पाकिस्तान, सऊदी दरियादिली पर बहुत अधिक निर्भर हैं। इसके अलावा, अरब देशों के लोकतंत्रीकरण को रोकने में इजराइल और सऊदी अरब की साझा दिलचस्पी है। अरब जगत में सत्तावादी सरकारें इजराइल को पश्चिम एशिया में एकमात्र लोकतंत्र के रूप में परेड करने की अनुमति देती हैं। सऊदी अरब दुनिया में लोकतांत्रिक लहर से डरता है, क्योंकि यह उसके शासन की निरंकुश प्रकृति को उजागर करेगा।

**अमेरिकी हस्तक्षेप**

ट्रम्प प्रशासन द्वारा सऊदी-इजरायल के सहयोग का सक्रिय रूप से समर्थन किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका सऊदी अरब और इजराइल द्वारा ईरान के खिलाफ संयुक्त मोर्चे के गठन में बेहद दिलचस्पी रखता है, क्योंकि पश्चिम एशिया में यह अमेरिका का प्रमुख विरोधी है। जारेड कुशनर, जो अमेरिका के राष्ट्रपति के दामाद और पश्चिम एशिया में प्रशासन के मुख्य व्यक्ति है, ने सऊदी क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन सलमान के साथ एक विशेष संबंध विकसित किया है ताकि इसे और अन्य छोरों से भी समर्थन प्राप्त हो सके। इसने जमाल खशोगी हत्या से पहले, जिसने सऊदी-इजराइल संबंध पर विराम लगा दिया, फिलिस्तीन के मुद्दे पर इजराइल की बात को स्वीकार करने के लिए प्रिंस मुहम्मद बिन सलमान के साथ अपनी शक्ति का इस्तेमाल किया था।

सऊदी असंतुष्ट पत्रकार, खशोगी की हत्या तुर्की के इस्तांबुल में सऊदी वाणिज्य दूतावास में सऊदी शासन के इशारे पर करने से पहले रियाद और तेल अवीव के बीच तालमेल 2 अक्टूबर, 2018 तक अप्रभावी रूप से तेजी से बढ़ रहा था। मोसाद प्रमुख योसी कोहेन सहित दोनों सरकारों के वरिष्ठ अधिकारियों ने कई बार मुलाकात की थी। सऊदी की ओर से, क्राउन प्रिंस के पूर्व वरिष्ठ सहयोगी, सऊद अल-कहतानी और पूर्व डिप्टी इंटेलिजेंस प्रमुख, मेजर जनरल अहमद अल-असीरी, ने इजराइल के साथ गुप्त वार्ता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

**खशोगी की हत्या**

हालाँकि, खशोगी की हत्या ने कई कारणों से कामों में खलल डाला है। जिसमें सबसे पहला है, दो प्रमुख सऊदी वार्ताकारों को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रदर्शित करने के लिए उनके महत्त्वपूर्ण पदों से हटा दिया गया है, ताकि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह लगे कि सऊदी शासन खाशोगी के हत्यारों को न्याय दिलाने में वास्तव में रुचि रखता है।

दूसरा, मुहम्मद बिन सलमान, जिसके विषय में कई लोगों का मानना हैं कि इन्होंने ही हत्या का आदेश दिया था, तीव्र आलोचना झेल रहे है, जिसमें प्रमुख सीनेटर और कांग्रेस भी शामिल हैं। इन्हें यमन दुराचार के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिससे हजारों नागरिक मारे गए हैं और लाखों लोग भुखमरी के कगार पर हैं। इसलिए, वह इस समय इजराइल के साथ पार्लियामेंट को जारी रखते हुए अधिक से अधिक राजनीतिक जोखिम उठाने का जोखिम नहीं उठा सकता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि सऊदी-इजराइल संबंध उस शत्रुता के स्तर पर वापस आ जाएंगे जो कभी दोनों देशों के बीच मौजूद थे। बढ़ती घनिष्ठता करीब दो दशकों से जारी है। यह क्राउन प्रिंस और सऊदी अरब के वास्तविक शासक के रूप में मुहम्मद बिन सलमान की नियुक्ति के साथ नाटकीय रूप से तेज हो गया था।

इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ईरान के प्रति उनकी सामान्य शत्रुता और अमेरिका के साथ उनके घनिष्ठ सुरक्षा संबंध अंततः सऊदी अरब और इजराइल को अपने संबंधों को फिर से शुरू करने और अंततः इसे सार्वजनिक करने के लिए प्रेरित करेंगे। हालांकि, इनके संबंध कुछ समय तक ठंडे रहने की संभावना है, जब तक कि खशोगी की हत्या सार्वजनिक स्मृति से समाप्त नहीं हो जाती।

## GS World टीम...

### पश्चिम एशिया का राजनीतिक खेल

**चर्चा में क्यों?**

- हाल ही में सऊदी के पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या ने विश्व के समक्ष सऊदी अरब शासन की क्रूर प्रकृति को स्पष्ट रूप से उजागर किया है।
- सऊदी अरब द्वारा जमाल खशोगी की हत्या इस्तांबुल स्थित वाणिज्य दूतावास में कर दी गई थी।
- खशोगी सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान की नीतियों के कटु आलोचक थे।
- इसके साथ ही इस संपूर्ण प्रकरण ने विश्व राजनीति में सऊदी अरब के अन्य देशों के साथ संबंधों को मुख्य पृष्ठ पर ला दिया है।

**क्या है मामला?**

- जमाल खशोगी की हत्या के मामले में सऊदी अरब ने अपने उप खुफिया प्रमुख अहमद अल-असिरी और शाही अदालत के मीडिया सलाहकार सौद अल-काहतानी को बर्खास्त कर दिया क्योंकि ये दोनों मोहम्मद बिन सलमान के शीर्ष सहायक थे और खशोगी की हत्या के मामले में बढ़ते दबाव का सामना कर रहे थे।
- सऊदी अरब खशोगी की हत्या से लगातार इनकार करता आ रहा था और उसके सबसे बड़े समर्थक अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पत्रकार की हत्या की पुष्टि होने पर उस पर प्रतिबंध लगाने की चेतावनी भी दी थी।
- इस हत्या के बाद तुर्की-सऊदी प्रतिद्वंद्विता का भी खुलासा हुआ जो अब तक सार्वजनिक रूप से छिपा हुआ था।
- दरअसल, पिछले कुछ हफ्तों में तुर्की प्रेस ने इस हत्या के बारे में सबसे गलत विवरण सार्वजनिक किये हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि इस हत्या में सऊदी क्राउन परिवार का हाथ था।

**अन्य संबंधित तथ्य**

- अभी हाल ही में प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका टाइम मैगजीन ने सऊदी पत्रकार जमाल खाशोगी को सम्मान देने के लिए उन्हें 2018 के टाइम पर्सन ऑफ द ईयर के लिए चुना है।
- पत्रिका ने यह सम्मान खशोगी सहित चार पत्रकारों और एक अखबार को दिया है।
- ऐसा पहली बार हुआ है जब किसी व्यक्ति को मरणोपरांत टाइम मैगजीन के कवर के लिए चुना गया हो।
- खाशोगी को सम्मान देते हुए मंगलवार को मैगजीन ने कहा कि उन्होंने सच की कीमत चुकाने वाले चार पत्रकारों और एक अखबार को सम्मान दिया है।
- खाशोगी के अलावा ये सम्मान फिलीपींस की पत्रकार मारिया रेसा, रयूटर्स के रिपोर्टर वा लोन, क्याव सोई ओ जो इस वक्त म्यांमार की जेल में बंद हैं और कैपिटल गैजेट को दिया गया है।

### संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
   1. हाल ही में प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका टाइम मैगजीन ने सऊदी पत्रकार जमाल खशोगी को वर्ष 2018 के 'टाइम पर्सन ऑफ द ईयर' के लिए चुना।
   2. इजराइल एक यहूदी देश है, जो फिलिस्तीन में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा बसाया गया है।
   3. तेल अवीव सऊदी अरब का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) 1 और 2
   (c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

### संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

**प्रश्नः हाल ही में इस्लामिक रूढ़िवादी राष्ट्र सऊदी अरब व यहूदी राष्ट्र इजराइल के बीच बढ़ती घनिष्ठता को किस प्रकार से देखते हैं? क्या यह घनिष्ठता इजराइल-फिलिस्तानी संघर्ष को हल करने में सहायक भूमिका निभाएगा? अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।**

**(250 शब्द)**

**नोट : 31** दिसम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।